पहचान

"हैलो दोस्तों, कैसे हो आप सब ? आप सबका आज के एक नये पोड़कास्ट में स्वागत है। मैं हूँ आपकी आर.जे लिया। इस पोड़कास्ट को शुरू करने से पहले मैं आपलोगों से कुछ सवाल करती हूँ। क्या आपको भारत के प्रधानमंत्री का नाम पता है ? क्या आपको अपने दोस्तों का जन्मदिन याद रहता है ? क्या आपको यह पता है कि आपके माते-पिता का मनपसंद रंग कौन-सा है ? अपने साथी की पसंद तो याद ही होगा आपको। लेकिन आप में से कितने लोग अपने आप को जानते हैं ? सिर्फ छोटी-छोटी चीजे नहीं जैसे.की आपकी पसंद, इच्छा, सपने, जन्मदिन, आदतें बल्कि आपकी ऐसी चीजे जो कोई नहीं जानता या शायद आप खुद नहीं जानते। आपकी ऐसे एक ऐसी आदत जो आप नहीं चाहते कि कोई और जाने, आपका कोई डर जिसका कारण आप नहीं जानते, खाली वक्त में आते आपके सोच और सोच के पीछे का कारण। ऐसा क्यों होना है कोई फिल्म या उसके पात्र हमारे मनपसंद बन जाते हैं ? क्यों कुछ गानें हम बार-बार सुनते हैं या

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി 17/01/26 പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

अचानक गुनगुनाने लगते हैं ? क्यों कुछ गाने हमें खुशी से भर देती हैं और कुछ हमारी आँखों में नमी भर देती हैं। क्यों हम दूसरों को रोता देख खुद रोते हैं। इन सब का जवाब आपको आज के इस पोड़कास्ट में मिलेगा। यह जवाब आपको मिलेगा एक छोटी सी कहानी से तो चलिए बिना देर किये शुरू करते हैं।

एक लड़की थी। ~~अन्नी~~ अंजली नाम था उसका। वह एक दयालु और समझदार लड़की थी। वह दिखने में भी खूबसूरत थी। उसके घने लंबे बाल थे। उसके घरवालों को उससे कई उम्मीदें थी कि उनकी बेटी एक दिन उनकी बेटी उनका नाम रोशन करेगी। उन्होंने उसे एक अच्छे स्कूल में पढ़ाया। उन्होंने हमेशा उसे याद दिलाया कि उन्हें उससे कई उम्मीदें हैं और इसलिए उसे अच्छे से पढना होगा। यह बात हमेशा उसके मन में बनी रही। उसने दोस्त भी ऐसे बनाये जो अच्छे से पढ़ते हो ताकि वह अपने माता-पिता की इच्छा पूरी कर सके। एक दिन जब उसने एक औरत को टी.वी पर अपने सफलता के बारे में बात करते हुए देखा तो उसे बहुत खुशी हुई। उसमें एक नई उम्मीद

जगी। उसने अपने माँ से पूछा कि ऐसा बनने के लिए उसे क्या करना होगा तो उसकी माँ ने कहाँ कि उसे ऐसा बनने की कोई जरूरत नहीं है। यह फिल्मों के सितारे बहुत घमंडी होते हैं। सिर्फ मतलबी लोग ही अपनी सफलता और दौलत के बारे में पूरी दुनिया को बताते है। उसको अपनी माँ का यह कहना कुछ अच्छा नहीं लगा पर उसने भी इस बात पर फिर कुछ ख़ास ध्यान नही दिया। उसने फिर अपनी पढ़ाई पूरी की और दिल्ली में उसे एक अच्छी कंपनी में नौकरी भी मिल गयी। उसने अपने घरवालो को जब इसके बारें में बताया तो वह बहुत खुश हुए। उनकी खुशी देखकर उसे भी खुशी हुई।

दो दिन बात उसने काम शुरू किया। तब जाकर उसे महसास हुआ कि लोग उससे बहुत अलग है। कई लोग तो आज सिर्फ अपने काम से काम रखते हैं। एक दिन वह एक पार्टी में गई, काम के सिलसिले में। वहा वह कई तरह के लोगों से मिली। लेकिन एक औरत से वह अपनी नजरें हटा ही नहीं पायी। पता नहीं क्यों उसे उस औरत को देखते ही उनसे

बात करने का मन किया। इसलिए वह उसके पास गई और उनसे बातें करने लगी, दोनों की जान-पहचान हुई और उसे पता चला कि वह एक लेखिका है। "आपके माँ-बाप को आपके लेखिका बनने से कोई परेशानी नहीं थी?" अंजली ने पूछा। "उन्हें परेशानी थी अंजली, वह तो मुझे डॉक्टर बनाना चाहते थे।" उसने जवाब दिया। "फिर आप लेखिका कैसे बनी?" अंजली ने पूछा। "पहले मैंने डाक्टरी की पढ़ाई की लेकिन बीच सफर में ही मुझे समझ आ गया कि मैं ये नहीं करना चाहती। हाँ, इससे मेरी जिन्दगी में कोई तकलीफ नहीं होती और बाकी लोग भी बहुत खुश होते। पर मैं दूसरों के खुशी के लिए नहीं बल्कि अपनी खुशी के लिए जीना चाहती हूँ। अपने फैसले खुद लेना चाहती हूँ। अपने आप को वह सब देना चाहती हूँ जो मैंने बचपन में चाहा था। इसलिए मैंने यह फैसला लिया। इसके दौरान कई मुश्किलें आयी लेकिन मैं अपने आप के लिए इतना तो कर ही सकती थी। अगर मैंने फैसला न लिया होता तो मैं एक अमीर और दुखी डॉक्टर बनती। क्योंकि ऐसे काम का क्या फायदा जिसे आप खुद नहीं करना चाहते?" उस औरत ने बताया।

अंजली अब गहरे सोच में पड़ गई थी। उसने उस औरत को अलविदा कहा और अपने घर लौट गयी। लेकिन उस रात वह सो नहीं पायी। वह रात भर सोचती रही। अपने आप के बारे में, अपने जिन्दगी अपने काम, अपने पसंद और फैसलों के बारे में। तब जाकर उसे एहसास हुआ कि वह अपने आप को ही नहीं जानती। "मैं कौन हूँ?" उसने अपने आप से पूछा। उसका जवाब उसे नहीं मिला। उसने फैसला किया कि वह हर-हाल में इसका जवाब ढूँढकर ही रहेगी। इसलिए उसने शहर छोड़ने का फैसला किया उसके माँ-बाप उसके इस फैसले से बहुत नाराज़ हुए। लेकिन वह अपनी जिन्दगी अपने आप के लिए जीना चाहती थी इसलिए उसने देश का सफर करने का फैसला किया। काफी जगह यात्रा करने पर वह, कई लोगों, विश्वासों संस्कारों और जिन्दगियों के बारे में उसे पता चला। उसे अपने हालातों का एहसास हुआ। इस सफर के अंत में वह पुरानी अंजली नहीं रही। उसे अपने पसंद, इच्छा और सपनों की जिन्दगी के बारे में एहसास हुआ। उसने अपने आप को पूरी तरह बदल लिया था। दूसरों के कहने पर नहीं बल्कि

इस बार उसने यह फैसला अपने आप के लिए, अपनी खुशी के लिए और सबसे ऊँपर अपनी खुद की पहचान बनाने के लिये लिया था। और वह दिल्ली की अंजली से आर जे लिया बनी। जी हाँ दोस्तों, यह मेरी कहानी है।

जिन्दगी में मैंने बहुत कुछ देखा और इससे मैंने काफी चीजें समझी और सीखी। लेकिन इसमें मेरे लिए सबसे बडी सीख यह थी कि अपनी जिन्दगी हमें अपने आप के लिए जीना चाहिए। हमारे हर सोच, हर डर, के हर पसंद की पीछे एक कारण होता है जो किसी याद या किसी घटना से जुड़ी होती है। इसलिए ही कुछ गाने हमें बहुत पसंद आती है और कुछ हमें रुलाती है। क्योंकि वह सब हमारे किसी यादों से जुड़ी होती है। कुछ फिल्म या उसके पात्र हमें इसलिए पसंद आते है क्योंकि हम अंदर ही अंदर उनके जैसा बन्ना चाहते है। कुछ लोगों के दर्द में हम खुद इसलिए रोते है क्योंकि उनके अंदर हम कहीं-न-कहीं अपने आप को देखते है। उनके जैसे ही एक दर्द या

याद हमें भी है। हमारी ~~हम~~ हर चीज़ हमारी यादों और सोच पर ही केंद्रित है। हर फैसला हमारे अनुभवों के आधार पर है। इसलिए हमें यह सोचने की जरूरत नहीं है कि 'लोग क्या सोचेंगे' बल्कि अपने आप को खुश करना चाहिए। क्योंकि इस दुनिया हमें पूरी तरह समझने के लिए किसी को हमारी वही यादें, सपने, अनुभव और विश्वास होने चाहिए और वह सिर्फ हमारे पास है। तो दोस्तों मैंने तो अपने आप को जान लिया पर क्या आप अपने आप को जानते हैं? अगर हाँ तो बहुत बढ़िया और अगर नहीं तो जल्द से जल्द अपने आप को पहचानिये। क्योंकि अपनी जिन्दगी अपने लिये जीने का हक़ तो हम सब को है। हम फिर मिलेंगे एक नये पोड़कास्ट में।"